अध्याय : 4

हमीदुल्ला के असंगत नाटकों में मनोवैज्ञानिकता

अध्याय : 4

हमीदुल्ला के असंगत नाटकों में मनोवैज्ञानिकता

भूमिका

"मनोविज्ञान" दो शब्दों के मेल मन + विज्ञान से बना है, जिसका अर्थ मन का विज्ञान होता है। मनोविज्ञान में मानव मन को विशेष महत्व दिया गया है। इसी कारण भारतीय अध्येताओं ने मनोविज्ञान का संबंध मन के अध्ययन से जोड़ दिया है। वस्तुतः मनोविज्ञान का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। साहित्य और मनोविज्ञान का घनिष्ठ संबंध है। साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा नाटक है और नाटक का एक अद्यतन रूप विसंगत नाटक है। जब किसी नाटककार की नाट्यकृतियों का अनुशीलन-परीक्षण किया जाता है तब मनोविज्ञान का सहारा लेना पडता है। क्योंकि मनोविज्ञान मन का विज्ञान है, जो व्यक्ति की भावात्मक, ज्ञानात्मक और क्रियात्मक शक्तियों का अध्ययन प्रस्तुत करता है। अतः किसी भी नाटककार की रचना-प्रक्रिया को समझने के लिए मनोविज्ञान विवेचन करना अनिवार्य हो जाता है। हमीदुल्ला मूलतः असंगत नाटककार हैं। किन्तु मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अपने पात्रों की सृष्टि करना उनका लक्ष्य नहीं है, फिर भी उनकी पात्र सृष्टि के मूल में मनोवैज्ञानिक धरातल दृष्टिगोचर होता है। उन्होंने अपने पात्रों के द्वारा मानव मन की बहुविध भावदशाओं और क्रिया-व्यापारों की अभिव्यक्ति की हैं। इस दृष्टि से उनके असंगत नाटकों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करना अनिवार्य हो जाता है।

मनोविज्ञान : स्वरूप और महत्व

मनोविज्ञान मन का विज्ञान है और मन बड़ा जटिल है। उसकी स्थिति, शक्ति, गति विवादास्पद और अनुमानित है। मानवीय क्रिया-व्यापारों के आधार पर ही मन को विश्लेषित किया जा सकता है। इस संदर्भ में तिथिलेश रोहतगी के विचार समर्पक लगते हैं - "मनोविज्ञान मन संबंधी विशिष्ट ज्ञान का प्रस्तोता

है। मन अदृश्य, अस्पष्ट, अस्पृश्य, विवादास्पद और अनुमानित है। मनःस्थिति का विश्लेषक व्याख्याता मनुष्य का व्यवहार है। अतः मनोविज्ञान मनुष्य-जीव के व्यवहार का विश्लेषक है।"[1] इसके साथ-साथ डॉ·यदुनाथ सिन्हा ने भी मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए लिखा है, "यह मन या चेतना का विज्ञान है। यह मानसिक प्रक्रियाओं के स्वरूप की जिज्ञासा करता है।"[2]

मानव समाजप्रिय प्राणी है। वह समाज में जीवन-यापन करते समय कई स्थितियों से गुजरता है। कभी वह अपनी इच्छानुकूल आचरण करता है तो कभी नीति-नियमों के भय से कई इच्छाओं को दमित करता है। इसलिए जीवन व्यवहार में उसके मन को बड़ा महत्व प्राप्त है। उसकी मनचेतना के अनुरूप ही उसके व्यवहार संचलित होते हैं। किन्तु उसके कुछ व्यवहारों को समाज वांछनीय मानता है और कुछ व्यवहारों को अवांछनीय। उसके मन में यह देखने की भी इच्छा होती है कि अपने कौनसे व्यवहार वांछनीय हैं और कौनसे अवांछनीय। इस समस्या का समाधान मनोविज्ञान ही कर सकता है, क्योंकि मनोविज्ञान मन का विश्लेषक है। उसके मनोविकारों का व्याख्याता है। मनुष्य के सामान्य से असामान्य क्रिया-व्यापारों का अध्ययन मनोविज्ञान करता है। नाटक में मानव मन के क्रिया-व्यापार ही अभिव्यक्त होते हैं। इसलिए नाटक के विश्लेषण के पूर्व मनोवैज्ञानिक धरातल को समझना अनिवार्य है। इस संदर्भ में डॉ·मधु जैन ने लिखा है - "मनोविज्ञान एक विकासशील अध्ययन प्रक्रिया है जिसके आधार पर मन की गतिविधियों को कार्य-कारण श्रृंखला से बाँधने का प्रयास किया जाता है।"[3]

असंगत नाटक और मनोविज्ञान

वर्तमान युग में नाटक की एक बहुचर्चित प्रवृत्ति असंगत नाटक है। असंगत नाटक मानव मन की विभिन्न विसंगतियों पर प्रकाश डालते हैं। ये नाटक पात्रों की विभिन्न मनोदशाओं को अंकित करते हैं। इस युग में मानव जीवन अत्यंत जटिल और यांत्रिक बना है, जिसका परिणाम मानव जीवन पर हुआ है। परिणामतः असंगत नाटक ही इन्हीं यथार्थपूर्ण समस्याओं को अंकित करते हैं। असंगत नाटकों का उद्देश्य ही मनुष्य की विसंगतिपूर्ण क्रिया-व्यापारों को चित्रित करना है। असंगत नाटक

मानव के बेतुकेपन और व्यर्थतापूर्ण मनोदशाओं को प्रकट करते हैं। इन नाटकों के पात्र प्रायः असंगत (Abnormal) रहते हैं। इन पात्रों के व्यवहार भी सामान्य और निरर्थक होते हैं। उनमे कोई क्रम नहीं होता। ऐसी स्थिति में इन पात्रों की स्थिति और गति को समझने के लिए मनोविज्ञान का आश्रय लेना पडता है।

हमीदुल्ला के असंगत नाटक और मनोविज्ञान

मानव मन विविध मनोविकारों का केंद्र है। उससे कई भाव और संवेग होते हैं। हमीदुल्ला ने अपने विसंगत नाटकों में मुख्य रूप से पात्रों की विभिन्न मनोदशाएँ, मनोविकृतियाँ एवं मनोरचनाओं का चित्रण अपने पात्रों के संवादों और क्रिया-व्यापारों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। स्वप्न-मनोविज्ञान, फैशन-मनोविज्ञान, तथा भीड-मनोविज्ञान ये मनोविज्ञान के अन्य आयाम हैं, जो विशेष महत्वपूर्ण हैं। उनके नाटकों के पात्रो में मनोविज्ञान के आयाम भी दृष्टिगोचर होते हैं। अतः हमीदुल्ला के असंगत नाटकों के अध्ययन-विश्लेषण के पूर्व विभिन्न मनोविकारों का परिचय प्राप्त करना आवश्यक हो जाता है।

मनोविकार

मानव मन विविधोन्मुखी भावों का केंद्र है। उसे सुखद और दुःखद दोनो प्रकार की अनुभूतियाँ होती हैं। कभी वह प्रमुदित होता है, तो कभी निराश होता है, कभी आवेश में भडक उठता है, तो कभी ठण्डा-सा पड़ जाता है। इन क्रिया-व्यापारों के पीछे उसके सुख-दुःखात्मक भाव संवेग ही प्रमुख होते हैं। जब ये भाव तीव्र रूप धारण करते हैं, तब उन्हें मनोविकार कहा जाता है। कुछ प्रमुख मनोविकार निम्नांकित है -

1· क्रोध : क्रोध शांति भंग करने वाला मनोविकार है। इसका मूल संवेग युयुत्सा-वृत्ति (Instinct of Pugnacity) है। क्रोध में किसी भी प्राणी के आंतरिक अवयवों में विशिष्ट प्रतिक्रिया की क्षमता आती है, प्राणी में बाधक स्थिति पर आक्रमण करने की क्षमता आती है। अतः "क्रोध दुःख के चेतन कारण के साक्षात्कार या अनुमान से उत्पन्न होता है।"[4] चिड़चिड़ाहट भी क्रोध का ही एक रूप है। किन्तु वह प्रायः शब्दों तक ही सीमित रहती है। हमीदुल्ला के असंगत

नाटकों में क्रोध का भी चित्रण हुआ है। "उलझी आकृतियाँ" नाटक की सुनीता अपने पति विकास के प्रति अपने मन का क्रोध उगलती है। उसके क्रोध में पति के प्रति नफरत दिखाई देती है।[5] "समय सन्दर्भ" में मशीनी मानवों का अपने निर्माता वैज्ञानिक बोस के प्रति विद्रोह क्रोध का ही उदाहरण है।

2· <u>भय</u> : भय एक सनातन मनोविकार है। मानव के मन में वह व्याप्त है। मानव ही नहीं बल्कि पशु-पक्षी, जीव-जंतु आदि सभी भय से अभिशप्त है। प्रत्येक जीव को किसी न किसी प्रकार का भय रहता ही है। आजकल न तो केवल भूत-प्रेत और पशु-पंछी मनुष्य के भय के कारण भयभीत हैं, बल्कि मनुष्य आज अपने अचेतन और अन्य मनुष्यों से भी भयभीत है। आ·रामचंद्र शुक्ल ने भय की परिभाषा देते हुए कहा है - "किसी आती हुई आपदा की भावना या दुःख के कारण के साक्षात्कार से जो एक प्रकार की आवेगपूर्ण अथवा स्तंभकारक मनोविकार होता है, उसी को भय कहते हैं।"[6] इसके परिणमस्वरूप मानव कुछ सम-विषम व्यवहार करता है। भय कभी प्रत्यक्ष उत्पन्न होता है तो कभी अप्रत्यक्ष और कभी अस्पष्ट भी। हमीदुल्ला के "समय संदर्भ" का पात्र "बोस" अपनी ही की हुई वैज्ञानिक उत्पत्ति {मशीनी मानव} से भयभीत होता है। उनके "हरबार" नाटक का पात्र "संशय" अपना तथा अपनी बूढी माँ का जीवन यापन करने के लिए समझौते की लाचारी को झेलता हुआ स्वामीनाथन के यहाँ काम करता है। इनके "सुदामा दिल्ली आये" नाटक में भी "भय" का चित्रण हुआ है। सुदामा मकान का किराया नहीं दे सकता। वह मकान मालिक के भय से घर में छुपकर बैठता है और पत्नी को कहता है कि मकान मालिक को कह दे कि सुदामा घर में नहीं है। "एक और युद्ध" की आशा का भय समाज में फैले हुए भ्रष्टाचार, अवसरवादी नीति आदि के कारण है। वह अपना इलाज कराने के लिए आखिर डॉक्टर के पास चली जाती है। हमीदुल्ला ने "दरिन्दे" नाटक के आरम्भ में ही भय को प्रदर्शित करने वाला दृश्य अंकित किया है। नाटक के आरम्भ में भक्तजन भागों-भागों की पार्श्वध्वनियाँ से भागने लगते हैं। यहाँ नाटककार ने वर्तमान में चले भ्रष्टाचार के कारण आज का व्यक्ति कितना भयभीत है इसके. प्रकट किया है।

३· <u>संत्रास</u> : "संत्रास" विषम परिस्थितियों के मध्य संचरनशील मानव के मन में असंतोष और भय से मिश्रित दुःखमूलक मनःस्थिति है।[8] निराशा, पीडा, संशय, कुंठा, आतंक एवं पराजय आदि का भी संत्रास में समावेश होता है। संत्रास को स्मृति, प्रत्यक्ष और कल्पना के रूप में देख सकते हैं। हमीदुल्ला के असंगत नाटक वर्तमान जीवन की यथार्थ की स्थिति का जायजा लेने के लिए लिखे होने के कारण असंगत नाटकों में संत्रास भी दिखाई देता है। उनके "हरबार" नाटक में संशय और शंकिता का संत्रास प्रत्यक्ष है। "घरबन्द" नाटक का पात्र "पति" का संत्रास भी प्रत्यक्ष है। उसके अलावा घर के सभी सदस्य हड़ताल करते हैं तो पति संत्रास में विचार करने लगता है। "अपना अपना दर्द" की मधु भी संत्रासजन्य जीवन व्यतीत करती है। उसके साथ-साथ "ख्यालभारमली" नाटक की भारमली भी संत्रास से पीड़ित है।

४· <u>चिन्ता</u> : चिंता का कारण भय ही है। क्योंकि भय से ही चिंता उत्पन्न होती है। फिर भी चिंता और भय एक नहीं है। चिंता भय की स्थिति या अवस्था पर निर्भर रहती है और वह वस्तु या आलम्बन की ओर ध्यान नहीं देती, भय में आम्बन या वस्तु की ओर ध्यान अवश्य दिया जाता है। अतः चिन्ता ही मानव के मानसिक विकारों की जड़ होती है। हमीदुल्ला के असंगत नाटकों के पात्र किसी न किसी प्रकार के भय के कारण चिन्तित दिखाई देते हैं। "दरिन्दे" की बूढी अपने बेटे को निसंतान देखकर चिंताग्रस्त है। उसके साथ-साथ "घरबन्द" नाटक का पति भी घर के सदस्यों का हड़ताल तोड़ने की चिंता में रहता है। दरिन्दे संग्रह के "दूसरा पक्ष" नाटक के पात्र दीनदयाल और शीला चिन्तित हैं कि बिशन से किस तरह छुटकारा पाये। इसी संग्रह के "अपना-अपना दर्द" नाटक की मधु अपने जीवन के प्रति चिंतित हैं और आखिर ऐक्सीडेण्ट में मर जाती है। "समय संदर्भ" नाटक का बोस मशीनी मानव का निर्माण तो करता है, लेकिन जब उसके सृजन {मशीनी मानव} ने ही उसके खिलाफ विद्रोह किया तो वह भय के कारण चिंताग्रस्त होता है। "एक और युद्ध" की आशा वर्तमान समाज में चले भ्रष्टाचार से चिंताग्रस्त है। "सुदामा दिल्ली आये" नाटक का पात्र सुदामा अपनी गरिबी

के कारण चिंतित हैं। "हरबार" नाटक के शंकिता और संशय भी अपने जीवन की मजबूरी के कारण चिंताग्रस्त दिखाई देता है। "उत्तर उर्वशी" का प्रकाश लेखक की किताब सस्ते दाम में खरीदने की चिंता में है तो लेखक प्रकाशक की पत्नी को पाने की चिंता में दिखाई देता है।

5· **हँसी** : प्रायः हँसी आंतरिक आनंद की बाह्य अभिव्यक्ति है। वह संघर्ष तथा तनाव को कम करने में सहायता करती है। हमीदुल्ला के नाटकों में हँसी के कई रूप दृष्टिगत होते हैं। "दरिन्दे" नाटक की रति को हँसी व्यंग्यात्मक है। "घरबन्द" के प्रति की हँसी खोखली हँसी है। जो अपने घर के सदस्यों की माँगे सुनते वक्त हँसता है। "उलझी आकृतियाँ" का बडे बाबू हँसकर नवयुवक की उसकी सीट दिखाता है, वह भी खोखलो हँसी है। "उत्तर उर्वशी" का स्वामीजी तो अट्टाहास ही करता है। उसके साथ-साथ वह क्रूर ठहका भी लगाता है। "हरबार" का स्वामीनाथन गंगे को पैसे के बदले शराब पिलाता है, तब वह उसको देखकर ठहाका लगाता है और चीयर्स कहता है, यह हँसी व्यंग्यात्मक है। "सुदामा दिल्ली आये" का जरीवाला का हँसना भी व्यंग्यात्मक है। "जैमजी" के पात्र व्यंग्यात्मक हँसते हैं। "बर्बरीक" नाटक का बर्बरीक नेपथ्य से ही ठहाके के साथ मंच पर प्रस्तुत होता है। वह वर्तमान मानव पर व्यंग्यात्मक हँसता है।

6· **संशय** : संशय मनोविकार को विशद करते हुए डॉ·हुकुमचंद राजपाल ने लिखा है - "वस्तुतः संशय एक ऐसी मनोवृत्ति है जिसकी उपादेयता {सार्थकता} व्यक्ति के व्यक्तित्व, अनुभव चेतना एवं विवेक पर आधारित है। विवेकशील व्यक्ति में यही संशय जहाँ जिज्ञासा, सहनशीलता एवं गति प्रदान करता है वही अविवेकी व्यक्ति को कुंठित एवं आत्मघाती तक भी बना सकता है।"[9] संशय को अंग्रेजी में "डाउट" (Doubt) कहते हैं, जो संदेह, शंका तथा अविश्वास आदि के समान माना जाता है। "उत्तर उर्वशी" के पुरूष एक और स्त्री·एक दोनों पात्र एक दूसरे के प्रति संशयित हैं, जो अकेलेपन को दूर करने के लिए बहाना ढूँढकर घर से प्रति दिन बाहर निकलते हैं। "हरबार" नाटक के पात्र शंकिता और संशय दोनों के नामकरण से ही संशय का पता चलता है। नाटककार ने उनका जीवन

ही संशयित बनाया है।

7· **ईर्ष्या** : ईर्ष्या एक ऐसा मनोविकार है जो हर व्यक्ति में पाया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रूप से दूसरों से इर्ष्या करता है। ईर्ष्या पुरूषों से अधिक स्त्रियों में होती है। वर्तमान की प्रायः प्रत्येक स्त्री एक-दूसरे को ईर्ष्या के कारण नीचा दिखाने की कोशिश करती है। "ख्याल भरमाली" नाटक में हमीदुल्ला ने उमादे और भारमली के बीच ईर्ष्या दिखाई है। भारमली को सौन्दर्य का गर्व है, तो उमादे को अपने रानीपन की ईर्ष्या है। वह राजा को छोड़कर मायके चली जाती है। भारमली राजा के यहाँ रहकर राजकाज संभालती है।

8· **घृणा** : घृणा एक मनोविकार है, जिसके कारण अप्रिय वस्तु को हर व्यक्ति अपने से दूर कर देता है। जब व्यक्ति के मन के विरूद्ध कार्य अथवा घटना होती है, तो व्यक्ति में घृणा दिखाई देती है। हमीदुल्ला ने अपने असंगत नाटकों में कुछ घृणापूर्ण प्रसंगों का अंकन किया है। जैसे, "ख्याल भारमली" नाटक में भारमली के कोख से जन्मे शिशु को राजा का उत्तराधिकारी नहीं मानते क्योंकि भारमली एक दासी थी। परिणामतः भारमली बीमार हो जाती है। उसे अपने नारित्व का अपमान लगता है। उसे लगता है कि राजा ने अपना सिर्फ उपभोग के लिए उपयोग किया है। तब वह राजा से घृणा करने लगती है। इसके परिणामस्वरूप प्रतिशोध लेने की हिंसात्मक भावना से वह बाघा डाकू, जो सत्ता और राजा का घोर विरोधी था, उसके पास चली जाती है। "हरबार" नाटक के संशय और शंकिता दोनों पात्र घृणित जीवन ही व्यतीत कराते हैं। उसके साथ-साथ इस नाटक के गंगे को स्वामीनाथन द्वारा शराब पिलाने का प्रसंग दर्शक और पाठकों के मन में स्वामीनाथन के प्रति घृणा उत्पन्न करता है। क्योंकि स्वामीनाथन उसको रूपयों के बदले शराब पिलाकर उसके गरिबी पर व्यंग्य कसता है। गंगे को उसके बच्चे को दवापानी करने के लिए रूपयों की जरूरत थी लेकिन स्वामीनाथन उसे सिर्फ सूझाव देता है।

मनोविकृतियाँ

मानव विचारशील प्राणी है। परंतु हर समय वह विचार कर ही क्रिया नहीं करता। अपनी प्राकृत अवस्था में वह शिथिलसा ही रहता है। अतः दैनिक जीवन क्रम में उसके हाथों कई भूले होती हैं। ये भूलें कभी सामान्य होती है, तो कभी असामान्य। इन सबका अध्ययन मनोविज्ञान में किया जाता है। जब व्यक्ति में सामान्य बातों की अपेक्षा सामान्य बाते ही प्रचुरता से दिखाई देते हैं, तब उसे असामान्य (Abnormal) कहते हैं। अक्सर असामान्य (Abnormal) व्यक्ति की मनोदशाओं तथा क्रियाव्यापारों में किसी न किसी प्रकार की विकृतियाँ दृष्टिगत होती हैं। मनोविकृति एक प्रकार का मानसिक असंतुलन है। जिससे मनुष्य के इद्म अहम् और परम् अहम् के बीच आंतरिक सूत्र टूट जाता है। परिणामतः उसके व्यवहारों में विशृंखलता आती है। ऐसे विशृंखल असंबंद्ध पात्रों के मनोविकृतियों को हमीदुल्ला ने अपने असंगत नाटकों में रेखांकित किया हैं। उनमें से कुछ मनोविकृतियाँ इस प्रकार हैं -

अ· <u>दैनिक जीवन की मनोविकृतियाँ</u> : वस्तुतः प्रत्येक व्यक्ति अपने दिन-प्रतिदिन के आचरण में कुछ न कुछ भूलें अवश्य करता है। यही भूले एक तरह की मनोविकृतियाँ ही है। चाहे व्यक्ति सामान्य हो या असामान्य उनमें ये मनोविकृतियाँ दिखाई ही देती है। व्यक्ति बोलने की भूलें, पहचानने की भूले, परिचित व्यक्ति के नामों की विस्मृति, लिखने तथा छपने की भूलें, वस्तुओं को गलत स्थान पर रखने की भूले आदि भूलें व्यक्ति अपने दिन-प्रतिदिन के व्यवहार-आचरण में करता है। हमीदुल्ला के असंगत नाटकों में भी दिन-प्रतिदिन की व्यवहार की भूलों का अंकन अवश्य हुआ है। उनके "समय सन्दर्भ" नाटक का बोस नामक पात्र इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। बोस की कम उर्म वाली पत्नी लिली है। बोस अपने कार्यालय में कार्यरथ है। उसने लिली से वादा किया था कि उसके बर्थ डे और अपने मैरिज डे मनाने के लिए ठिक पाँच बजे घर लौटेगा। ऐसा वादा करके भी वह भूल जाता है। इसलिए लिली उससे फोन पर शिकायत करती है। बोस का यह भुल्लक्कडपन दैनिक जीवन की मनोविकृति ही है। उनके "उलझी आकृतियाँ" नाटक का विकास

भी भूलने की मनोविकृति से ग्रस्त दिखाई देता है। विकास एक कार्यालय में अफसर है। उसकी स्टेनो बेला है। वह बेला को साडी भेंट करता है किंतु वह खुद ही बेला से पूछता है कि अपने यह साडी कहा से खरीदी। तब बेला उसे याद दिलाती है कि आपने ही मुझे ये साडी दी थी। प्रस्तुत विकास का विस्मरण दैनिक भूल का ही अच्छा उदाहरण है।

ब· <u>मनोविक्षिप्तता</u> : मनोविक्षिप्तता एक मनोविकृति है। इसमे मानव का मानसिक संतुलन बिगाड़ता है। उसकी कुछ क्रियाएँ उसके व्यक्तित्व के साथ संकलित नहीं रह पाती। उन क्रियाओं में संगति नहीं होती। अतः वह सामाजिक व्यवहार में संतुलन खो बैठता है। इस मनोविकृति की अत्याधिकता से उसका व्यक्तित्व विघटित होता है। परिणामतः अपने व्यवहारों पर उसका नियंत्रण रहता और वह उनके परिणामों से भी अनभिज्ञ रहता है। प्रायः वह कल्पना लोक में डूबा रहता है। उसके व्यवहारों में इतने दोषपूर्ण स्थित्यंतर होते हैं कि लोग उसे पागल कहते हैं। हमीदुल्ला के "एक और युद्ध " के पेमास्टर में यह मनोविकृति दिखाई देती है। पेमास्टर इसी कारण मनोविक्षिप्त है कि उसके पास पैसा कम जमा होता है और जरूरतमन्द किसानों में बाँटा जाता है ज्यादा। रामूड़ा और नाथ्या को पच्चीस-पच्चीस रूपये देते समय उसकी हालत पागल जैसी प्रतीत होती है। उदाहरण दृष्टव्य है -

पेमास्टर : ले, यहाँ अँगुठा लगा। अब ये उँगली, अब ये, अब ये····अब इस हाथ का अँगूठा लगा, अब ये उँगली, अब ये, अब ये···अब ये पाँव का अँगूठा, ये उँगली, अब ये, अब ये···अब दूसरे पाँव का अँगूठा, ये उँगली, ये,ये,ये···अब तू नाथूड़ा।[10]

क· <u>**लैंगिक विकृतियाँ**</u> : लैंगिक प्रवृत्ति मनुष्य में अन्य प्रवृत्ति की तरह महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इसकी अपूर्ति से मनुष्य पागल-सा रहता है। इतः उसके जीवन में लैंगिक इच्छा महत्व रखती है। वह यह इच्छा अपने से भिन्न लिंगी व्यक्ति के द्वारा पूर्ण करता है। "यह समायोजन भली-भाँतिन होने से पति-पत्नी के सम्बधों में कडवाहट आ सकती है। काफलन का कथन है कि एक सामान्य पुरूष

की कामेच्छा 35 वर्ष के आसपास अपनी चरमसीमा पर पहुँचा जाती है। परन्तु स्त्रियों की कामेच्छा 25 वर्ष के बाद शिखर पर पहुँचती है। इस कारण से कई बार लैंगिक समायोजन में कठिनाई आती है।"[11] ऐसे व्यक्ति की लैंगिक इच्छा की पूर्ति असामान्य और अस्वाभाविक ढंग से पूरी करते हैं। वर्तमान "समाज में यांत्रिकता का बोलबाला है, व्यक्तित्व का संघटन होना एक जटिल समस्या बन गयी है। यही कारणहै कि मानसिक रोगियों की संख्या में दिन-प्रतिदिन बढोतरी हो रही है;"[12] अतः आधुनिक समाज में नैतिकता के परम्परागत मूल्यों का -हास होने लगा है और नये-नये मूल्य आ रहे हैं। परिणामस्वरूप नई पीढी में यौन-संबंधों में भी उच्छृंखलता आने लगी है। हमीदुल्ला ने उच्छृंखलता को दिखाने के लिए अपने असंगत नाटकों में कई पात्रों का अंकन लैंगिक विकृतियों के दृष्टि से किया है।

1· <u>परपीड़न</u> : परपीड़न एक लैंगिक मनोविकृति है। जिसमें व्यक्ति दूसरों को कष्ट पहुँचाकर लैंगिक सुख हासिल करता है। हमीदुल्ला के "बर्बरीक" नाटक के युवती के साथ ऐसा होता है। युवती को ठाकूर के हवेली पहुँचाया जाता है। उस वक्त युवती का शरीर भय से काँप रहा था। जब ठाकूर जबरदस्ती करने ही लगाता तो युवती उसे लाठी मारती है। इसी वक्त ठाकूर के आदमी आकर युवती को चाबुक से मारते हैं। उसके बाद ठाकूर उसके साथ समागम करता है। युवती को चाबुक से मारना परपीड़न ही है। यह युवती के संवादों से अंकित होता है, जैसे - "उन्होंने चाबुक की मार से मेरा सारा शरीर फोड़ दिया। मैं जोर-जोर से चिल्ला रही थी। रो रही थी। तड़प रही थी। लेकिन किसी ने मुझे उन दरिन्दों से मुक्त नहीं कराया।"[13]

2· <u>प्रतिजातीय वस्त्रासक्ति</u> : यह एक लैंगिक विकृति है। इसमें पुरूष स्त्री के वस्त्रों और स्त्री-पुरूषों के वस्त्र धारण करने मात्र से लैंगिक सुख का अनुभव करते हैं। हमीदुल्ला के "उत्तर उर्वशी" नाटक के लेखक में यह विकृति नजर आती है। वह पडोस के कम उम्र वाली लडकी के पुराने कपडे लेना चाहती है और अपने वासनापूर्ति के लिए रखना चाहता है। उदाहरण दृष्टव्य है -

ले·§ब§ : जिसे पा ना सको, उसके पहनने के पुराने कपडे उड़ालो और···और····
वो पेटीकोट जिसमें····।

ले·§अ§ : चुप नहीं रह सकते।

ले·§ब§ : उस दिन बाथरूम में एक अखबार में छपी नंगी स्त्री की तसवीर के साथ····।

ले·§अ§ : वह सब भूख है। जरूरत है।[14]

3· **स्पर्श आसक्ति** : इस विकृति में व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के स्पर्श में ही लैंगिक सुख का अनुभव करता है। हमीदुल्ला के "उत्तर उर्वशी" नाटक में यह विकृति दिखाई देती है। इस नाटक में लेखक के पड़ोस का कम उम्रवाली लडकी गिरते के बहाने लेखक से लिपट जाती है, उसका गिरने का बहाना बनाकर लिपटना स्पर्श आसक्ति का उदाहरण है -

ले·§ब§ : तो फिर हाथ क्यों पकडा था उसका अभी ? और उसे अपनी तरफ क्यों खींच लिया था।

ले·§अ§ : वह गिरने के बहाने मुझसे लिपट गयी थी। उससे नफरत है। जानता हूँ, इसी की वजह से कल्पना के घर से कुत्ते की तरह दुत्कारा गया था।[5]

अतः स्पष्ट होता है कि, व्यक्ति अपनी लैंगिक पूर्ति स्पर्श मात्र से भी अनुभव करता है।

4· **पुरूष भाव प्रतिमा** : इसमें स्त्री, पुरूषों के गुणों का आचरण करती है। अर्थात पुरूषों के गुण उसमे दिखाई देते है। यह विकृति प्रायः उन स्त्रियों में होती है, जो पुरूषों से समानता का भाव रखती है। ऐसी स्त्री शासन के सूत्र अपने हाथों में रखती है। हमीदुल्ला के "ख्याल भरमाली" नाटक की भारमली इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। "राजा जब शिकार के लिए जाता या बाहर होता, तो भारमाली सरदारों को आदेश देती। मुकदमे सुनती और उनके फैसेले सुनाती। राजकाज संभालती है।"[15] अतः यहाँ भारमली द्वारा राजा के अधिकारों को जताना पुरूष

भाव प्रतिमा ही है।

5· <u>नग्नता प्रदर्शन आसक्ति</u> : इसमें व्यक्ति दूसरों को नग्न देखकर लैंगिक सुख का अनुभव करता है। यह विकृति स्त्री-पुरूष दोनों में भी स्वाभाविक रूप से होती है। अतः इस प्रवृत्ति की व्यक्ति दूसरों को नग्न देखकर ही लैंगिक सुख प्राप्त करती है। हमीदुल्ला के असंगत नाटकों में यह प्रवृत्ति भी यत्र-तत्र दिखाई देता है। उनके "उलझी आकृतियाँ" नाटक की बेला विकास के सामने अपना पल्लू गिराकर झुकती है।

6· <u>नपुंसकता या अकामुकता</u> : ऐसी विकृति से ग्रस्त व्यक्ति काम की इच्छा तो रखती है लेकिन उसमें समागम करने की क्षमता नहीं होती। परिणामस्वरूप ऐसी व्यक्ति में कामवासना का अभाव होता है। हमीदुल्ला के "दरिन्दे" नाटक को राहुल में यह विकृति दिखाई देती है। वह अपने पत्नी को लैंगिक सुख देने की अनुमति अपने मित्र रवि कोदेता है। इसके साथ-साथ उनके "हरबार" का निर्जीव भी नपुंसकता का शिकार है। इसी वजह से वह अपनी पत्नी शंकिता को कुछ देने में सफल नहीं होता। शंकिता उसे छोडकर स्वामीनाथन के यहाँ नौकरी करती है।

7· <u>अतिकामुकता</u> : इस विकृति से पीड़ित स्त्री-पुरूष दोनों में भी काम-इच्छा अत्यंत तीव्र होती है। तथा ऐसी व्यक्ति अनेक स्त्रियों के साथ समागम करने की इच्छा रखती है। उसके मन की पूर्ति कभी नहीं होती। हमीदुल्ला के "उत्तर उर्वशी" नाटक की मोना तथा लेखक में यह विकृति दिखाई देती है। मोना लेखक के साथ समागम करने की इच्छा रखती है तो लेखक के मन में भी यही इच्छा होती है। आखिर लेखक मोना को अलिंगनबध्द कर लेता है।

<u>मनोरचनाएँ या रक्षा -युक्तियाँ</u> : प्रत्येक व्यक्ति दिन-प्रतिदिन चिन्ता से पीड़ित होता है। इसी कारण उत्पन्न समस्याओं का निराकरण करने के लिए रक्षा-युक्तियाँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इससे मनुष्य के चेतन या अचेतन स्तर को दूर किया जाता है। रक्षा-युक्ति ऐसी मानसिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा इदम्, अहम् तथा परम् अहम् के बीच निर्माण होने वाला संघर्ष को मिटाया जाता है। वास्तव में रक्षा-युक्ति समायोजन प्रकिया ही है। इससे मानव, चाहे वह सामान्य

हो या असामान्य, संघर्ष निर्माण करने वाली स्थिति के साथ समायोजन प्रयोजित करता है। हमीदुल्ला के असंगत नाटकों के पात्रों में भी इसप्रकार रक्षा-युक्तियाँ या मनोरचनाएँ नजर आती हैं।

1· **दमन अथवा विरोध** : यह रक्षा-युक्ति सबसे विशेष है। मनुष्य के मन में इच्छाएँ अनेक प्रकार की होती हैं। अतएंव प्रतिदिन की व्यवहार में उनकी कुछ इच्छाएँ सदैव नैतिक और सामाजिक नहीं होती। क्योंकि उनकी कुछ इच्छाएँ ऐसी होती हैं, जो न तो नैतिक होती है और न ही सामाजिक। ऐसी इच्छाओं का दमन कर व्यक्ति उन्हें अचेतन रूप से भूल जाने के लिए ढकेल देता है। इससे चेतन मन में उत्पन्न होने वाले संघर्ष का समाधान माना जाता है। व्यक्ति में यह दमन की क्रिया अपने आप होती है। दमित इच्छाएँ व्यक्ति के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से चेतन स्तर पर आना चाहती है। इतना ही नहीं कि वे कभी कभी स्वप्नों, दिवास्वप्नों या दिन-प्रतिदिन की भूलों के द्वारा प्रकट होती है। हमीदुल्ला के "अपना-अपना दर्द" नाटक की मधु का चरित्र दमित दिखाई देता है। वर्तमान के स्वार्थ ने उसके जीने की ललक छीन ली है। उसके साथ बिहारी और वीरेन विश्वासघात करते हैं। वे अपनी स्वार्थपूर्ति होते ही उसे अपने घर से निकाल देते हैं। ऐसे स्थिति में मधु विचार करते रस्ते से चलने लगी तो वह कार एक्सीडेण्ट में मर जाती है।

2· **संक्षिप्तीकरण** : संक्षिप्तीकरण में एक ही विचार अथवा प्रसंग के माध्यम से अनेक विचार या प्रसंगों को अभिव्यंजित किया जाता है। यह स्वप्न-प्रक्रिया मे विशेष उपयुक्त है। हमीदुल्ला के "सुदामा दिल्ली आये" नाटक में सुदामा का स्वप्न संक्षिप्तीकरण का सुन्दर उदाहरण है। सुदामा की पत्नी स्वप्न में आम बाते छोड़ने के लिए कहती है और उसका कर्तव्य याद कर देती है।

3· **विस्थापन** : इसमें महत्वपूर्ण तत्व गोण हो जाते हैं और गोण तत्व महत्वपूर्ण। "जब व्यक्ति अपने संवेग, विचार तथा इच्छा को उन व्यक्तियों पर से हटाकर जिनसे वे मौलिक रूप से सम्बद्ध होते हैं, अन्य व्यक्तियों तथा पदार्थो पर स्थानान्तरित कर देते हैं तो वह विस्थापन कहलाता है।"[17] हमीदुल्ला के "दूसरा

पक्ष" नाटक का दीनदयाल अपनी नाजायज़ औलाद मोती को पराया मानता है। असल में मोती उसका बेटा होकर भी सामाजिक डर के कारण वह उसे अपने से दूर करना चाहता है।

4· **अन्तःक्षेपण** : इसमें व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों के व्यक्तित्व गुणों को अपने व्यक्तित्व का एक आवश्यक गुण मानने लगता है। इसमें व्यक्ति अपने वातावरण के गुणों को भी अपने व्यक्तित्व में समाविष्ट करता है। इसी तरह व्यक्ति द्वारा परिवेश के मूल्यों को स्वीकार करने पर सामंजस्य की समस्या बहुत आसान होती है। "दरिन्दे" नाटक का राहुल अपने उपर नपुंसकता का लगा हुआ लेबिल हटाने के लिए अपने मित्र रवि को उर्मिला से समागम करने की अनुमति देता है।

5· **क्षतिपूर्ति** : क्षतिपूर्ति एक समायोजनात्मक प्रवृत्ति है। यदि कोई व्यक्ति किसी बात में अपने को हीन समझने लगती है तो वह किसी न किसी प्रकार की क्षतिपूर्ति करता है और अपनी रक्षा करता है। यह चेतन तथा अचेतन दोनों ही स्तर पर होती हैं। वास्तव में सभी व्यक्ति अपना विकास करने के लिए क्षतिपूर्ति को अपनाते हैं। अतः हर व्यक्ति में प्रभुत्व पाने की मौलिक इच्छा होती है। "ख्याल भरमाली" नाटक की भारमली क्षतिपूर्ति द्वारा ही अपना प्रभुत्व पाना चाहती है। उसे प्रेम के क्षेत्र में भी और अधिकार के क्षेत्र में भी क्षति सहनी पडती है। स्वच्छंद प्रेमी उसका स्वभाव है, जो उसे राजमहल में नहीं मिलता। साथ-साथ उसके संतान को उत्तराधिकारी नहीं माना जाता जिससे उसके नारित्व का अपमान होता है। परिणामतः वह प्रेम और अधिकार की पूर्ति के लिए बाघा के पास जाती है। प्रस्तुत उसकी यात्रा क्षतिपूर्ति व्यवहार का द्योतक है।

6· **वास्तविकता से पलायन** : इसमें व्यक्ति दुःखद घटनाओं से पलायन करता है। इसके द्वारा दुःख भरी स्थिति से बचने का व्यक्ति अर्थात् वास्तविकता से पलायन कर उसके तरफ से मुँह मोड़ देता है। डॉ·लाभसिंह और डॉ·गोविंद तिवारी ने कहा है कि यह समायोजन का अच्छा तरीका नहीं है।[18] हमीदुल्ला के नाटकों के पात्र उबे हुए, आवारा, थके-हारे एवं विक्षिप्त होने के कारण जीवन में संघर्ष करने के अलावा वे रक्षायुक्तियों का सहारा लेकर विवशता से भरा जीवन-

यापन करते हैं, या वास्तविकता से मुँह मोड़कर जीवन व्यतीत करने की चेष्टा करते हैं। उनके "बर्बरीक" नाटक में "सर्वकाल व्यापी समय की अदालत में मैकबेथ और उसकी पत्नी द्वारा डंकन की हत्या और मैकबेथ के नाटककार शेक्सपीयर द्वारा उसकी त्रासदी के लिए अपराध की अस्वीकृति का उल्लेख"[19] वास्तविकता से पलायन ही है।

मनोविज्ञान के अन्य आयाम :

हमीदुल्ला ने अपने असंगत नाटकों में मनुष्य की विभिन्न विकृतियों, मनोविकारों और मनोरचनाओं या रक्षा-युक्तियों को पात्रों के कथोपकथन और हावभावों के द्वारा स्पष्ट किया है, ठिक उसी तरह उन्होंने अपने असंगत नाटकों मे मनोविज्ञान के कुछ अन्य आयामों को अंकित किया है। अतः उनके असंगत नाटकों में मनोविज्ञान के अन्य आयाम निम्नांकित हैं -

स्वप्न मनोविज्ञान : स्वप्न मनुष्य को अनोखी दुनिया में ले जाते हैं और स्वप्न का मनुष्य के अंतर्जगत् से गहरा संबंध होता है। "हमारी मानसिक क्रियाएँ सतत होती रहती हैं। निद्रावस्था में भी यह नष्ट या समाप्त नहीं हो पाती। हमारी निद्रावस्था मे जो स्वप्न आते है, वे इसी बात के प्रतीक हैं कि हमारी मानसिक क्रियाएँ चली रही हैं।"[20] वस्तुतः स्वप्न स्मृति और कल्पना की रचना है, जिसकी सामग्री जागरित अनुभवों से ही चुनी जाती है।"[21] अतः स्पष्ट है कि मनोविज्ञान की दृष्टि से स्वप्नों का अनन्य साधारण महत्व है। हमीदुल्ला के असंगत नाटकों में केवल "सुदामा दिल्ली आये" नाटक में ही स्वप्न दृश्य दिखायी देता है। सुदामा अपने मित्र गोपाल से मिलने दिल्ली चला आता है। किन्तु दिलली में जरीवाला और रोजी उसे फँसाने की कोशिश करते हैं। रोजी, सुदामा से प्रेम का नाटक करने लगती है। इससे सुदामा कुछ मात्रा में सम्मोहित भी होता है। जब वह गहरी नींद में सोता है तब उसे स्वप्न में उसकी पत्नी आती है। वह सुदामा को उसके कर्तव्य की याद दिलाती है कि तुम दिल्ली अपने मित्र गोपाल से मदत माँगने गये थे न कि किसी दूसरे औरत के प्रेम में फँसने के लिए। उदाहरण दृश्य है -

पत्नी : तो उसकी मोहिनी सूरत तुम्हारे मन में बसी है ?

सुदामा : येस। आफकोर्स।

पत्नी : उसकी सूरत भूल गये ? जो मुझे बन्धक बनाकर तुमचे छीन लेना चाहता है। तुम तो दिल्ली जाकर पराये हो गये। हाय, मैं लुट गई। बरबाद हो गई।

सुदामा : क्या मकान मालिक की बात कर रही हो ?

पत्नी : उसकी ही ।

सुदामा : उस झडूस को तो मैं कभी नही भूल सकता। मैं उसे देख लूँगा। मुझे गोपाल से मिलना होगा।

पत्नी : तुम गोपाल से मिलने दिल्ली गये थे।[22]

यह संवाद सुदामा स्वप्न में ही अपने पत्नी के साथ करता है। इसी स्वप्न के द्वारा सुदामा को अपने कर्तव्या का ध्यान होता है।

स्वप्न के प्रकार

स्वप्न का वर्गीकरण करना सरल नहीं। व्यक्ति को अनेक प्रकार के स्वप्न आते हैं। इच्छापूर्ति स्वप्न, चिन्ता स्वरूप स्वप्न, भविष्य, सूचक स्वप्न, गति स्वप्न, दण्ड स्वप्न, मृत्यु के स्वप्न, प्रतिविरोध स्वप्न, सामूहिक स्वप्न, लवके के स्वप्न आदि।[23] हमीदुल्ला के "सुदामा दिल्ली आये" नाटक का पात्र सुदामा का स्वप्न चिंता स्वप्न है। वह स्वप्न से हडबड़ाकर उठता है।

भीड़ का मनोविज्ञान

जब अनेक व्यक्ति एक स्थान पर किसी कारण से एकत्रित आते हैं, तो भीड़ निर्माण होती है। अतः उस समूह का केंद्रबिंदु एक ही होता है। अतः डॉ॰मधु जैन की भीड के संदर्भ में अनुभूति यह रही है कि, "भीड़ कुछ लोगों का एक ऐसा समूह है जिसमें कुछ समय के लिए लोगों के ध्यान का केन्द्र-बिन्दु एक ही विषय हो।"[24] इससे स्पष्ट होता है कि भीड़ स्थायी नहीं होती। वह अस्थिर ही होती है। भीड़ जितनी शीघ्र इकट्ठी होती है उतनी ही जल्दी हट भी जाती

है।

हमीदुल्ला के "समय संदर्भ" नाटक में भीड़ का मनोविज्ञान दिखाई देता है। इस नाटक के मशीनी मानव अपने हक्क के लिए बोस जो वेज्ञानिक है, उसके खिलाफ विद्रोह करते हैं। तो इस भीड़ में भी मनोवैज्ञानिकता दिखाई देते है। बोस भी शोर तथा नारेबाजी से डरता है। उनके "एक और युद्ध" नाटक की सुशीला का पति युद्ध में मारा जाता है, तब सुशीला के चारो ओर कुछ व्यक्ति भीड़ से खड़े रहते हैं। यह भीड़ गम्भीर वातावरण को अंकित करती है। क्योंकि इसमें सिसकियों के स्वर निकलते हैं।

फैशन का मनोविज्ञान

मनुष्य प्राणी स्वभाव से ही सौन्दर्यप्रिय रहा है। उसकी यह सौंदर्यप्रियता उसे हमेशा सुन्दर चीजों पर आकृष्ट करती है। इसी कारण उसमें अनुकरण की प्रवृत्ति भी आ गयी है। वह हमेशा खुद को दूसरों से अलग दिखाने की कोशिश करता रहता है। परिणामतः मनुष्य की इसी प्रवृत्ति के फलस्वरूप फैशन का जन्म हुआ है। वर्तमान का मनुष्य तो कभी प्रतिष्ठा के लिए फैशन करता है तो कभी दूसरों से भिन्न रहने की प्रवृत्ति उसे फैशन की ओर ले चलती है, तो कभी सुंदरता दिखाने के लिए फैशन की प्रवृत्ति दिखाई देती है, तो कभी अनुकरण करने के लिए फैशन। यह प्रवृत्ति पुरूषों से ज्यांदा स्त्रियों में अधिक पायी जाती है। हमीदुल्ला के असंगत नाटकों के ज्यादा से ज्यादा पात्र असामान्य रहे हैं। अतः वे फैशन के संबंध में उतने सजग नहीं प्रतीत होते, फिर भी उनके असंगत नाटकों के स्त्री पात्रों में यह प्रवृत्ति नज़र आती है। उनके "अपना अपना दर्द" नाटक की मालती अधेड़ उम्र की संतानहीन विधवा होने पर भी उसे अपने सुंदरता पर गर्व है। वह आधुनिक वस्त्रालंकार पहनकर नाटक में उतरती है। उसके साथ साथ उनके "सुदामा दिल्ली आये" नाटक की रोजी भी फैशन करती है। वह सिंगारदान के सामने आकर खडी होती है और अपने को विभिन्न कोनों से देखती है। इससे स्पष्ट होता है कि वह भी सुंदर दिखाने के लिय फैशन करती है।

स मा हा र

उपरोक्त विवेचन के आधार पर निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि,

× हमीदुल्ला का अपने असंगत नाटकों के पात्रों की सृष्टि मनोवैज्ञानिक धरातल पर करने का उद्देश्य नहीं है, फिर भी उनके आलोच्य असंगत नाटकों में मनोविज्ञान के कुछ आयाम सहज दृष्टिगत होते हैं।

× उन्होंने असंगत नाटकों में विभिन्न मानसिक दशाओं का चित्रण बड़ा ही मार्मिक किया है। जैसे क्रोध, भय, संत्रास, चिंता, हँसी, संशय, ईर्ष्या, घृणा आदि मनोविकार स्पष्ट रूप से नजर आते हैं। लेकिन यह मनोविकार विसंगत स्थितियों को ही स्पष्ट करते हैं।

× हमीदुल्ला के असंगत नाटकों में दैनिक जीवन की विभिन्न मनोविकृतियाँ, मनोविक्षिप्तता के दर्शन होते हैं।

× हमीदुल्ला के असंगत नाटकों के पात्र दमन अथवा विरोध, संक्षिप्तीकरण, विस्थापन, अन्तःक्षेपन, पलायन तथा क्षतिपूर्ति आदि रक्षायुक्तियों के द्वारा जीवन से समायोजन करने का प्रयास करते हैं।

× हमीदुल्ला के असंगत नाटकों में स्वप्न, भीड़, फैशन आदि को मनोवैज्ञानिक ढंग से अंकित किया है।

× हमीदुल्ला के असंगत नाटकों में परिलक्षित होने वाले विभिन्न मनोवैज्ञानिक आयाम मुख्यतया पात्रों के संवादों, क्रिया-व्यापारों और कुछ मात्रा में रंग-संकेतों के माध्यम से अभिव्यंजित किये हैं।

संदर्भ

1· डॉ·मिथलेश रोहतगी - हिन्दी कहानी का मनोवैज्ञानिक अध्ययन, प्र·सं·1979, पृ·1

2· मनोविज्ञान - डॉ·यदुनाथ सिन्हा, अनुवाद-डॉ·गोवर्धन प्रसाद भट्ट,पृ·33

3· डॉ·मधु जैन - यशपाल के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, प्र·सं·1977, पृ·18

4· आ·रामचंद्र शुक्ल - चिंतामणि, पहला भाग, सं·1965, पृ·131

5· हमीदुल्ला - उलझी आकृतियाँ, प्र·सं·अक्तुबर 1973, पृ·226

6· आ·रामचंद्र शुक्ल - चिन्तामणि, पहला भाग, सं·1965, पृ·124

7· हमीदुल्ला - समय सन्दर्भ, प्र·सं·अक्तुबर 1973, पृ·55-56

8· डॉ·हुकुमचंद्र राजपाल - विविध बोध : नये हस्ताक्षर, प्र·सं·1976, पृ·46

9· वही, पृ·41

10· हमीदुल्ला - एक और युद्ध, प्र·सं·अक्तुबर 1973, पृ·114

11· भाई योगेन्द्रजीत - विकासात्मक मनोविज्ञान, तृतीय सं·1982, पृ·143

12· डॉ·एस·एस·माथुर - सामान्य मनोविज्ञान, बारहवाँ सं·1982, पृ·497

13· हमीदुल्ला - "बर्बरीक", सं·अप्रैल 1986, पृ·23

14· हमीदुल्ला - "उत्तर उर्वशी", दूसरा सं·1983, पृ·49-50

15· वही, पृ·50

16· हमीदुल्ला - ख्याल भारमली, प्र·सं·1981, पृ·27

17· डॉ·ममता शुक्ल - मन्नू भंडारी के कथा साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन, प्र·सं·1989, पृ·137

18· डॉ·लाभसिंह / डॉ·तिवारी - असामान्य मनोविज्ञान के मूल आधार, चतुर्थ सं·1982, पृ·208

19· हमीदुल्ला - बर्बरीक, (विजय कुलश्रेष्ठ, हमीदुल्ला का रंगजगत",लेख), सं·अप्रैल 1986, पृ·42

20· डॉ·एस·एस·माथुर - सामान्य मनोविज्ञान, बारहवीं सं·1982, पृ·392

21· डॉ·वीणा श्रीवास्तव - भारतीय एवं पाश्चात्य स्वप्न सिद्धान्त, प्र·सं·1980, पृ·31

22· हमीदुल्ला - सुदामा दिल्ली आये, प्र·सं·1992, पृ·43-44

23· डॉ·एस·एस·माथुर - सामान्य मनोविज्ञान, बारहवीं सं·1982, पृ·394-395

24· डॉ·मधु जैन - यशपाल के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन, प्र·सं·1977, पृ·161